

संधि - 'मेल'

'दो वर्णों का परस्पर मेल' संधि कहलाता है अर्थात् प्रथम शब्द का अन्तिम वर्ण और दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन करता है तो उसे संधि कहते हैं-

जैसे - अधिक + अधिक - अधिकाधिक

आ

अभि + अर्थ

अभ्यर्थ

अभ्यर्थ

अभय + अरण्य - अभयारण्य

आ

संधि से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बातें:-

- ① → आगम - वि + छेद \Rightarrow विच्छेद, शाला + दान \Rightarrow शालादान
 - ② → लोप - युक् + राज = युक् राज, पितृ + हन्ता = पितृहन्ता
 - ③ → आदेश - वाक् + हरि = वाग्धरि, उत् + शृङ्खला = उत्शृङ्खला
 - ④ → प्रकृतिभाव - मनः + कामना = मनःकामना, तपः + पूत = तपःपूत
- रजः + कण = रजःकण, अन्तः + पुर = अन्तःपुर

संधि के भेद:- 'तीन भेद'



- ① → स्वर संधि - स्वर + स्वर
- ② → व्यंजन " - 'स्वर + व्यंजन, व्यंजन + स्वर, व्यंजन + व्यंजन'
- ③ → विसर्ग संधि - ः + स्वर / व्यंजन'

विशेष- संयोग - प्रथम शब्द का अन्तिम वर्ण और दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए, उसे संयोग कहते हैं -
जैसे- मानव + ता = मानवता, युग + बोध = युग्बोध, अन्तर + देशीय = अन्तरदेशीय



① स्वर संधि- 'स्वर+स्वर'

जब किसी स्वर के बाद स्वर ही आ जाय तो स्वर के उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते हैं-

जैसे- दीप + उत्सव - दीपोत्सव, ऊह + अपोह - ऊहोपोह

दर्शन + उत्सुक - दर्शनीत्सुक, परि + उषण - पर्युषण

स्वर संधि के भेद:-

- (i) → दीर्घ स्वर संधि
- (ii) → गुण स्वर संधि
- (iii) → वृद्धि स्वर संधि
- (iv) → यण् स्वर संधि
- (v) → अयादि स्वर संधि